भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति

जीवन-परिचय : सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक का नाम भट्टारक इन्द्रभूषण के पश्चात् आता है। इन्होंने केसरियाजी क्षेत्र पर दो चैत्यालयों की प्रतिष्ठा की है।

इनका समय विक्रम संवत् की 18वीं शती है।

रचना-परिचय : सुरेन्दकीर्ति की निम्नलिखित रचनाएँ प्राप्त हैं—

1. पद्मावती पूजा, 2. कल्याणमन्दिर छप्पय, 3. एकीभाव छप्पय, 4. विषापहार छप्पय, 5. भूपाल छप्पय।